हो जाये बंद वाणी, तेरा नाम रटते-रटते

हो जाये बंद वाणी, तेरा नाम रटते–रटते,
एक साथ यही होगा, नाम मरते–मरते।
यश आपका मैं गाऊँ, दुनियाँ से चला जाऊँ।
तेरे धाम तक पहुंचू, गुणगान करते–करते।। हो जाये...............
खुद को मैं भूल जाऊँ, फिर होश में न आऊँ।
प्रभु नाम वाले अमृत का पान करते करते।। हो जाये...............
देखा करूंगा राहें, जब तक ना आप आ जायें।
तब न तन से निकलें, मेरे प्राण मरते–मरते।। हो जाये............
हर साँस से पुकारूँ, मेरा रोम–रोम बोले।
तेरे धाम तक मैं पहुंचू, गुणगान करते करते।। हो जाये............

उठ जाग रे मुसाफिर किस नींद सो रहा है

उठ जाग रे मुसाफिर किस नींद सो रहा है।
जीवन अमूल्य प्यारे, क्यों मुफ्त खो रहा है।।
रहना ना यहाँ पर होगा, दुनियां सराये फानी।
फंस कर नदी में प्यारे, क्यों मस्त हो रहा है।।
ले लो धर्म का तोफा, मत भूल ऐ दिवानें।
नेकी की खेती करले, क्यों पाप बो रहा है।।
माता–पिता वो भाई, होवे ना कोई साथी।
क्यों मोह रूपी बोझा, नाहक में ढो रहा है।।
किस्ती तेरी पुरानी हिकमंत से पार कर ले।
ए दिल अथाय जल में, तू क्यों डूबो रहा है।।
उठ जाग रे मुसाफिर किस नींद सो रहा है।।

तीन बार भोजन, भजन एक बार

तीन बार भोजन, भजन एक बार,
इसमें भी आते हैं झंझट हजार।
मन मेरा कहता है गंगा नहा आऊँ,
गंगा नहा आऊँ, यमुना नहा आऊँ।
जाते जाते रस्ते में आ गया बुखार,
तीन बार भोजन, भजन एक बार
मन मेरा कहता है मंदिर हो आऊँ,
मन्दिर हो आऊँ दर्शन कर आऊँ।
जाते–जाते मन्दिर के लग गये किवाड़,
तीन बार भोजन, भजन एक बार
मन मेरा कहता है दान कर आऊँ,
दान कर आऊँ धर्म कर आऊँ।
मंहगाई है ज्यादा बड़ा है परिवार,
तीन बार भोजन, भजन एक बार
मन मेरा कहता है पूजा कर आऊँ,
सतसंग सुन आऊँ कथा सुन आऊँ।
पैदों में दर्द हो गया अपार,
तीन बार भोजन, भजन एक बार।।

थके हैं लाखों ही ज्ञानी ध्यानी

थके हैं लाखों ही ज्ञानी ध्यानी, न तुम को कोई निहार पाया।
अपार माया तुम्हारी भगवन, कभी किसी ने ना पार पाया।।
किसी ने वन–वन की खाक डाली, किसी ने पूजा है आग पानी।
कहाँ पर किस रूप में रमे हो तुम, न यह किसी ने विचार पाया।।
किसी ने माया में उम्र गवांई, फिरा है काशी, गया में कोई।
हर एक तारों में स्वर तुम्हारा, तुम्हारा लेकिन ना तार पाया।।
थके हैं लाखों ही ज्ञानी ध्यानी, न तुम को कोई निहार पाया।।

जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है

जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है।
कि हर शै में जलवा तेरा हू ब हू है।
मैं सुनता हूँ हर वक्त तेरी ही कहानी,
जिकर तेरा ही हो रहा कु ब हूँ कू है।। जिधर देखता हूँ..............
चमन में सरू पर यह गाती है कुमरी,
तू ही तू – तू ही तू – तू ही तू है एक तू है। जिधर देखता हूँ.....
बिना उस के माबूद ओरों को बोलो,
जुबां को सम्भालो यह क्या गुफ्तगू है। जिधर देखता हूँ................
हर एक शजर पै बुलबुल यह कहता है खालिक,
जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है।।

दुःख तो है मानव की सम्पत्ति

दुःख तो है मानव की सम्पत्ति तू दुःख से क्यों घबराता है।
सुख तो दुःख का परिणान, रे पगले दुःख से क्यों घबराता है।। दुःख तो....
सुख आया है तो जायेगा दुःख भी, तो आ जायेगा आ कर।
सुख जायेगा, दुःख दे कर, दुःख दे जायेगा सुख आकर।
दुःख दे कर जाने वालों से रे मानव भय क्यों करता है।। दुःख तो....
सुख आलस वारान का घर है, दुःख में मनुष्य चमकता है।
दुःख की ज्वाला में तप कर, कुन्दन सा तेज चमकता है।
दुःख का अभ्यासी मानव ही सुःख पर अधिकार जमाता है।। दुःख तो....
सुख संध्या का वो लाल क्षितिज जिसके पश्चात अंधेरा है
दुःख प्रातः का छुटपुटा समय है इसके बाद सवेरा है।
सुख में सब भूले रहते हैं, दुःख प्रभु की याद दिलाता है।। दुःख तो....
दुःख के सन्मुख तो सिहर उठा, उसका इतिहास न जान सका,
दुःख में धारण जो धैर्य रहा, उसको ही जग पहचान सका।
दुःख एक कसौटी है जिस पर यह मानव परखा जाता है।
दुःख तो है मानव की सम्पत्ति तू दुःख से क्यों घबराता।

तू काहे करे अभिमान खिलौने माटी के

तू काहे करे अभिमान खिलौने माटी के,
है वक्त बड़ा बलवान, खिलौने माटी के।
संसार मुसाफिर खाना, इस दिन तो उठ कर जाना है।
बन कर आये महमान, खिलौने माटी के।। तू काहे करें..............
सुख में तो मुझे गले लगाये, दुःख हो तो सब दूर हो जाये।
तू इसकी सच्चाई जान, खिलौने माटी के।। तू काहे करें............
जीवन बड़ा अनमोल है प्राणी, तूने इसकी कदर ना जानी।
जरा खुद को ले पहचान, खिलौने माटी के।। तू काहे करें........
तूने दौलत पैसा खूब कमाया, पर अंत समय संग चल ना पाया।
करले प्रभु का ध्यान, खिलौने माटी के।। तू काहे करें................
सागर गहरा नांव पुरानी, मुश्किल बचता है कोई प्राणी।
तू सोया चादर तान, खिलौने माटी के।
तू काहे करे अभिमान खिलौने माटी के,

उत्तरा का विलाप

बिना पति सूना सब संसार।
पति ही व्रत है, पति ही तप है, पति ही है करतार।।
बिना पति सूना.................................
पति ही से पत है, इस तन की, पति पत राखन हार।
बिना पति सूना.................................
जब लो पति है तब लो पत है बिना पति विपद हजार।
बिना पति सूना.................................
जिस का नेह चरण पति के नहीं पति बता नार।।
बिना पति सूना.................................
एक पति व्रत रहे जगत में, तो सब व्रत निसार।।
बिना पति सूना.................................
बिना पति के नारी का, जीवन है धिक्कार।
बिना पति सूना सब संसार।।

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो।
मन को विषयों के विष से बचाते चलो।
देखना इन्द्रियों के न घोड़े भगे,
रात दिन इनको संयम के कोड़े लगें।
अपने रथ को सुमारग चलाते चलो।। कृष्ण गोविन्द..............
प्राण जाये मगर नाम भूलो नहीं।
दुःख में तडफों नहीं सुख में फूलों नहीं।
नाम धन का खजाना बढ़ाते चलो।। कृष्ण गोविन्द..............
नाम जपते रहो काम करते रहो, पाप की वासनाओं से डरते रहो।
प्रेम भक्ति के आंसु बहाते चलो।। कृष्ण गोविन्द..............
ख्याल आयेगा उनको कभी ना कभी, दास पायेगा उनको कभी ना कभी।
ऐसा विश्वास मन में जगाते चलो, कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो।।

भाव के भूखे हैं भगवान

भाव के भूखे हैं भगवान।
भाव ना हो तो सच्चा मन में, तो सब व्यर्थ विधान।
भक्तजनों का भाव ही होता, चारों फल का दाता।
भाव से जो पत्थर को पूजे, नारायण मिल जाता।।
भाव ही इस लिये प्रधान, भाव के भूखे हैं भगवान।
भाव के भूखे हैं भगवान।।

तुम ही माता-पिता तुम ही हो

तुम ही माता–पिता तुम ही हो, तुम ही हो बन्धु सखा तुम ही हो।
तुम ही हो साथी, तुम ही सहारे, कोई ना अपना सिवा तुम्हारे।
तुम ही हो नैय्या, तुम ही खिवैया, तुम ही हो बन्धु सखा तुम ही हो।।
जो खिल सके ना वो फूल हम है, तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं।
दया की दृष्टि सदा ही रखना
तुम ही माता–पिता तुम ही हो, तुम ही हो बन्धु सखा तुम ही हो।

भिलनी बुहारे रास्ता, आवेंगे राम जी

भिलनी बुहारे रास्ता, आवेंगे राम जी।
मेरा भी धन्य जीवन बनायेंगे राम जी।
हाथों से अपने रोज वो राहें संवारती।
कांटे लगे ना प्रभु को, कोमल हैं पांव जी।। भिलनी बुहारे........
डलियो में बेर वो चुन–चुन के बागों से ला रही।
खट्टे लगे या मीठे खायेंगे राम जी।। भिलनी बुहारे
आयें है जब श्री राम जी, दीवानी हो गई।
बैठाया ना हरि को, भूली है काम जी।। भिलनी बुहारे
खट्टे हो या मीठे चाहे, फिर भी वो खा रहे।
लक्ष्मण ने फैंके पीछे, देखे ना राम जी।। भिलनी बुहारे
बेर द्रोणागिरी पर पहुंचा, संजीवनी बना।
लक्ष्मण लगी शक्ति, लाये हैं हनुमान जी।। भिलनी बुहारे
भिलनी बुहारे रास्ता, आवेंगे राम जी।।

भगवान मेरी नैय्या उस पार लगा देना

भगवान मेरी नैय्या उस पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना।।
दलबल के साथ आ कर माया जो मुझ को घेरे।
तुम देखते ना रहना, झट आ कर छुड़ा लेना।। भगवान मेरी नैय्या...
सम्भव है झंझटों में मैं तुमको भूल जाऊँ।
पर नाथ कहीं तुम भी, मुझको ना भुला देना।। भगवान मेरी नैय्या...
हम मोर बन कर मोहन, नाचा करेंगे वन में।
तुम श्याम घटा बन कर, इस वन में छाये रहना।। भगवान मेरी नैय्या...
बनकर हम पपीहा, पी पी रटा करेंगे।
तुम स्वामी बूंद बन कर प्यासे पर दया करना।। भगवान मेरी नैय्या...
हम राधेश्याम जग में तुम को ही निहारेंगे।
तुम दिव्य ज्योति बन कर नैनों में रमा करना।।
भगवान मेरी नैय्या उस पार लगा देना।।

राम नाम सुखदाई भजन करो भाई

राम नाम सुखदाई भजन करो भाई ये जीवन दो दिन का।
हरे राम हरे श्याम हरे राम हरे श्याम ये जीवन दो दिन का।
ये तन है कागज की पुड़िया हवा चले उड़ जाई। भजन करो भाई।।
ये तन है चन्दन की लकड़ी आग लगे जल जाई। भजन करो भाई।।
ये तन है माटी का ढेला, बूंद पड़े गल जाई। भजन करो भाई।।
ये तन है सपनों की माया आँख खुले भग जाई। भजन करो भाई।।
राम नाम सुखदाई भजन करो भाई ये जीवन दो दिन का.....................
राम नाम के दो अक्षर मे सब सुख शान्ति समाई। भजन करो भाई।।
राम का नाम लेत मुख से भव सागर तर जाई। भजन करो भाई।।
राम नाम भज ले मन मूर्ख बनत–बनत बन जाई। भजन करो भाई।।
राम नाम के कारण बन गई पागल मीरा बाई।
भजो रे मन राम नाम सुखदाई
गणिका का गिद्ध अजामिल तारे तारे सदन कसाई। भजो रे मन...............
झूठे बेरन में शबरी के भर गई कौन मिठाई। भजो रे मन...............
मीठे समझ के ना प्रभु खाये, प्रेम की थी अधिकाई। भजो रे मन...............
भजो रे मन राम नाम सुखदाई भजन करो भाई ये जीवन दो दिन का।

इस तन पर दया करना

इस तन पर दया करना इस मन में रहा करना।
बैंकुठ तो यही है इस मन में बसा करना।। इस तन पर.........
हम मोर बन कर मोहन नाचा करेंगे वन में,
तुम श्याम घटा बन कर, उसमें ही उठा करना।। इस तन पर...
हो करके हम पपीहा, पी–पी रटा करेंगे।
तुम स्वाती बूंद बन कर, प्यासे पर दया करना।। इस तन पर...
हम राधेश्याम जग में, तुम को ही निहारेंगे।
तुम दिव्य ज्योति बनकर, नैनों में रहा करना।। इस तन पर......
इस तन पर दया करना इस मन में रहा करना।।

आरती मंगलकारी की

आरती मंगलकारी की, पवन सुत अति बलशाली की।।
गले में तुलसी की माला, बजाये मिरदंग कर ताला,
हृदय में दशरथ के लाला,
भाल पर तिलक अनोखी झलक कथा की ललक।
मुधर छवि जनहित हितकारी की।। आरती मंगलकारी की.....
जगत में दुर्लभ जितने काज, कृपा से देते सब ही अवाज,
नाम से भागत भूत पिशाच, राम के दूत, अंजनी के पूत बड़े मजबूत।
कठिन बली कली मलहारी की,
आरती मंगलकारी की, पवन सुत अति बलशाली की।।
साधु संत के रखवारे, सभी भगतन के अति प्यारे।
ज्ञानी भगवत के द्वारे, सभी मंगल करण,
सकलदुख हरण, मुक्ति मम करण, राम के आज्ञाकारी।
आरती मंगलकारी की, पवन सुत अति बलशाली की।।
आरती सब जन मिल गावे, कृपा सब हनुमत की पावें।
मनोरथ पूर्ण हो जावे, दयानिधि नाम, सकल गुण धाम, ज्ञान की खान
अतुल सिद्धि, भव निधि कारी की,
आरती मंगलकारी की, पवन सुत अति बलशाली की।।

फूलों से तुम हसना सीखो, भवरों से गुनगुनाना

फूलों से तुम हंसना सीखो, भवरों से गुनगुनाना।
सूरज की किरणों से सीखो, जगना और जगाना।।
धूवें से ये सार की सीखो, ऊंची मंजिल जाना।
वृक्षों की डाली से सीखो, फल पा कर झुक जाना।
मेंहदी के पत्तों से सीखों, धिस-धिस कर रंग लाना।
पतझड़ के पत्तों से सीखों, दुःख में धीर बंधना।।
सुई और धागे से सीखो, बिछुड़े गले लगाना।।
मुर्गे की बोली से सीखो, प्रातः प्रभु गुण गाना।।
कोयल की बोली से सीखो, मीठे वचन सुनाना।
श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ट से सीखो, मृत्यु से छुट जाना।
फूलों से तुम हंसना सीखो, भवरों से गुनगुनाना।

जब तक है तेरी जिन्दगी, फुर्रसत ना मिलेगी काम से

जब तक है तेरी जिन्दगी, फुर्रसत ना मिलेगी काम से।
ऐसा कोई समय निकालो, प्रीत बने श्री राम से।
जय राम, जय राम, जय जय राम, श्री राम जै राम जय जय राम।।
राम नाम के दो अक्षर की महिमा है अति भारी।
राम कृपा जिस के ऊपर हो वो सुखी रहे संसारी।
राम नाम नित बोल तू बन्दे, जीवन बिता आराम से।
ऐसा कोई समय निकालो, प्रीत बने श्री राम से।।
पांच पहर दिन खाते खातिर, जहाँ–वहाँ तू खोय।
तीन पहर तू तान के चादर, गहरी नींद में सोय।
एक पहर तू सुमरन कर ले, राम का विश्राम से।
ऐसा कोई समय निकालो, प्रीत बने श्री राम से।।
बीता बचपन खेल–खेल में, और जवानी रागरंग में।
सारा जीवन बीत गया, किया ना साधु संग में।
राम रंग में रमजा अब तो, सेवा कर निरकाम से।
ऐसा कोई समय निकालो, प्रीत बने श्री राम से।।
एक घड़ी आधी घड़ी, आधी की पुन्य आध।
तुलसी संगत साधु की, कोटि करें अपराध।
पत्थर भी सागर से, तर गये, राम नाम के नाम से।
ऐसा कोई समय निकालो, प्रीत बने श्री राम से।
जब तक है तेरी जिन्दगी, फुर्रसत ना मिलेगी काम से।।

क्रोध ना छोड़ा, झूठ ना छोड़ा

क्रोध ना छोड़ा, झूठ ना छोड़ा, राम जपन क्यों छोड़ दिया।
झूठे जग में ललचा कर, असल नाम क्यों छोड़ दिया।।
कोड़ी को तो खूब सम्भाला, नाम रत्न क्यों छोड़ दिया।
क्रोध ना छोड़ा........................
जिन सुमरन से अति सुख पावे, तिन सुमरन क्यों छोड़ दिया।
क्रोध ना छोड़ा........................
खालिस एक भगवान भरोसे, तन–मन–धन क्यों छोड़ दिया।।
क्रोध ना छोड़ा, झूठ ना छोड़ा, राम जपन क्यों छोड़ दिया।

मेरे बाबा के दरबार में सब लोगों का खाता

मेरे बाबा के दरबार में सब लोगों का खाता।
मेरे मालिक की दुकान में सब लोगों का खाता।
क्या साधु, क्या संत, गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी,
प्रभु जी की पुस्तक में लिखी है सब की करम कहानी।
मेरे मालिक की दुकान में सब लोगों का खाता।
बड़े–बड़े कारण प्रभु के बड़ी–बड़ी मर्यादा,
किसी को कोड़ी नहीं देता, किसी को दमड़ी ज्यादा।
इसलिये तो इस दुनियाँ का जगत सेठ कहलाता,
मेरे मालिक की दुकान में सब लोगों का खाता।।
नहीं चले यहाँ पर रिश्वत, नहीं चले चालाकी,
अपने–अपने लेने देने की रीति बड़ी है न्यारी।
मेरे मालिक की दुकान में सब लोगों का खाता।।
करता वही हिसाब सभी का एक आसन पर बैठे,
उस का फैसला कभी ना पलटे लाखों कोई सर पटके।
समझदार तो समझ ही जाता, मूर्ख शौर मचाता,
मेरे मालिक की दुकान में सब लोगों का खाता।।

दुःख दूर कर हमारा संसार के खिवैया

दुःख दूर कर हमारा संसार के खिवैया।
दुःख दूर कर हमारा संसार के रचैया।
जल्दी से दो सहारा मंझधार में है नैया।
तुम बिन कोई हमारा, रक्षक नहीं यहाँ पर।
ढूंढा जहान सारा, तुम सा नहीं खिवैया।। दुःख दूर कर.........
दुनियाँ में खूब देखा, आँखे पसार करके।
साथी नहीं हमारा, माँ बाप और भैय्या।। दुःख दूर कर.............
सुख के सब संघाती, दुनियां के यार सारे।
तेरा ही नाम प्यारा, दुःख दर्द से बचैया।। दुःख दूर कर..........
दुनियां में फंस के हमको, हासिल हुआ न कुछ फल।
तेरे बिना हमारा, कोई नहीं सुनैया।। दुःख दूर कर.................
चारों तरफ से हम पर, गम की घटायें छाई।
सुख का करो उजारा, प्रकाश के करैया।। दुःख दूर कर.........
अच्छा बुरा है जैसा, राजी में राम रहता।
चेरा है यह तुम्हारा, सुध लैके सुध लिवैया।
दुःख दूर कर हमारा संसार के खिवैया।

न यह तेरा न यह मेरा, मन्दिर है भगवान का

न यह तेरा न यह मेरा, मन्दिर है भगवान का।
पानी उस का भूमि उसकी सब कुछ उसी महान का।।
हम सब खेल खिलौने उसके खेल रहा करता रे रे।
उसकी ज्योति सब में चमके सबमें उसका प्यार रे।
मन मन्दिर में दर्शन कर ले, उन प्राणों के प्यार का।
तीर्थ जाये मन्दिर जाये, अनगित देव मनाये रे।
दीन रूप राम सामने देख के मन फिराये रे।
मन की आँखे खुल जाये तो, क्या करना हमें ज्ञान का।
न यह तेरा न यह मेरा, मन्दिर है भगवान का।।
कौन है ऊचाँ कौन है नीचा, सब है एक समान रे।
प्रेम की ज्योति जगा हृदय में राखे, हरी भोले नादान रे।
न यह तेरा न यह मेरा, मन्दिर है भगवान का।
पानी उस का भूमि उसकी सब कुछ उसी महान का।।

कहीं फिरे मनवा कहीं फिरे माला

कहीं फिरे मनवा कहीं फिरे माला।
गुरू ऐसी भक्ति से नहीं रीझन वाला।।
आशा व तृष्णा का मन में ख्याल है।
मकड़ी के जाल जैसा बिछा हुआ जाल है
हाथों में घूम रही तेरी मेरी माला।। कहीं फिरे मनवा..............
बगुला की तरह जो भक्त बन जाते हैं।
कर्म ऐसे कर माला निन्दा की घुमाते हैं।
राम करे ऐसो से पड़े नहीं पाला।। कहीं फिरे मनवा............
भक्ति की शक्ति से स्वर्ग झुक जाते हैं।
ज्ञानियों के हृदय में प्रभु घर बैठे आते हैं।
वृति भैं बैठ के कर ले उजाला।। कहीं फिरे मनवा................
पहले से पहले दृढ़ आसन लगायेंगे,
वाणी की वीणा से गुरू को रिझायेंगे।
केवल पियेंगे हम प्रभु नाम प्याला।
कहीं फिरे मनवा कहीं फिरे माला।
गुरू ऐसी भक्ति से नहीं रीझन वाला।।

हे दयामय हम सबो को शुद्धताई दीजिए

हे दयामय हम सबो को शुद्धताई दीजिए।
दूर करके हर बुराई को भलाई कीजिए।
ऐसी कृपा हो अनुग्रह हम पर हो परमात्मा।
तो हमारे देशवासी सब के सब धर्मात्मा।
हो उजाला सब के मन में ज्ञान के प्रकाश से।
और अंधेरा दूर सारा हो, अविद्या के नास से।
खोटे कर्मो से बचे और गुण गायें सभी।।
सारी विद्याओं को सीखें ज्ञान से भरपूर हो।
शुभ कर्म में होवे तत्पर दुष्ट गुण सब दूर हो।
यज्ञ हवन से हो सुंगधित अपना भारत देश।
वायु जब सुखदाई होवे जायें मिट सारे क्लेश।
वेद के प्रचार में होवे सभी पुरुषार्थ।
होवे आपस में प्रीत और बने प्रभार्थी।
लोभी और कामी क्रोधी कोई भी हम में ना हो।
सारे व्यवसनों से बचे और छोड़ देवे मोह को।
अच्छी संगत में रहे, और वेद मार्ग पर चले।
तेरे ही होवे उपासक, और कुकर्मो से बचे।
कीजिए केवल का हृदय शुद्ध अपने ज्ञान से।
मान भक्तों में बढ़ाओ अपनी भक्ति दान से।
हे दयामय हम सबो को शुद्धताई दीजिए।।

मैं राम नाम गुण गाऊँ

मैं राम नाम गुण गाऊँ।
तेरा सहारा लेकर भगवन भव सागर तर जाऊँ।। मैं राम नाम......
विपदा के मारो का तू है, जन्म–जन्म का साथी।
तेरे नाम से रोशन, दुनिया की अंधियारी बाती।
मन मन्दिर में निशदिन भगवन, प्रेम की ज्योति जलाऊँ।। मैं राम नाम....
कहते हैं कण–कण में प्रभु जी तेरा ही रूप समाया।
फिर भी मैं भगवन देख ना पाऊँ।। मैं राम नाम..................
मुझ को दान करो वो अखियाँ, जिनसे मैं दर्शन पाऊँ।।
मैं राम नाम गुण गाऊँ।।

निर्बल के प्राण पुकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे

निर्बल के प्राण पुकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे।
स्वासों में स्वर गुंजार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे।।
आकाश हिमालय संसार में, पृथ्वी पाताल चराचर में।
यह मधुर बोल गुंजार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे।।
जब दया दृष्टि हो जाती है, सूखी खेती हरियाती हैं।
इस आस पर जन उच्चार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे।।
सुख दुःख की चिन्ता है ही नहीं, भय है विश्वास ना जाये कहीं।
टूटे ना लगा यह तार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे।।
निर्बल के प्राण पुकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे।।

राम का नाम ले लो घड़ी दो घड़ी

राम का नाम ले लो घड़ी दो घड़ी,
जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं।
क्या पता है किसे मौत आयेगी कब,
इस जवानी का कोई ठिकाना नहीं।
राम का नाम ले लो घड़ी दो घड़ी.............................
राम का नाम लेकर तो मीरा तरी,
गिद्ध गणिका, अजामिल तरी सबरी।
ज्ञान होते हुए भी नहीं ध्यान है,
ऐसे ज्ञानी का कोई भरोसा नहीं।।
राम का नाम ले लो घड़ी दो घड़ी.............................
चार दिन लिये हैं ये खिली चांदनी,
लहराता हुस्न सब ढल जायेगा।
गोरे गालों पर ये पानी में जो लाज है,
ऐसी जवानी का कोई भरोसा नहीं।।
राम का नाम ले लो घड़ी दो घड़ी.............................
काम क्रोध लोभ में जो बचा, प्रेम से जो राम का किया है भजन।
राम कृपालु का होता है तारन तरन,
इस आंसु रूहानी का कोई भरोसा नहीं।
राम का नाम ले लो घड़ी दो घड़ी.............................

राम के नाम से प्यार कर लीजिये

राम के नाम से प्यार कर लीजिये,
झूठे प्यारों का झंझट हटा दीजिये।
राम का नाम ही तेरा साथी बने,
तीनों लोकों का सच्चा संघाती बने।
और आशा को मन से भुला दीजिए।।
राम के नाम से प्यार....................
नाम ले कर तो गणिका अजामिल तरे,
नाम ले कर तो हजारों पापी तरे।
ऐसा विश्वास मन में जमा लीजिये।।
राम के नाम से प्यार....................
नाम बूटी अमर है जिसे दी गई।
नाम ले कर तो मीरा जहर पी गई।।
राम के नाम से प्यार....................
नाम ले करके जीवन अमर कीजिये।
नाम ले करके जीवन सफल कीजिए।।
राम के नाम से प्यार....................
नाम जपते रहो काम करते रहो,
कोई भूखा मिले टुकड़ा देते रहो।
ऐसी सेवा में मन को लगा लीजिये,
झूठे प्यारों का झंझट हटा दीजिये।
राम के नाम से प्यार कर लीजिये।।

सुना है तारे है, तुमने लाखों

सुना है तारे है, तुमने लाखों, हमें भी तारो तो हम भी जाने।
उबारा गजराज ग्रह से था, हमें भी तारो तो हम भी जाने।
निशाचरो को संहारा तुमने, उतारा पृथ्वी का भार तुमने।
हमारे सर पर है बोझ भारी, उसे उतारो तो हम भी जाने।
हरा अहिल्या का श्राप तुमने, मिटाया शबरी का शाप तुमने।
हमारा भी कष्ट हाय भगवन, अगर निवारो तो हम भी जाने।
सुना है तारे है तुमने लाखों, हमें भी तारो तो हम भी जाने।।

हरि नाम सुमर सुखधाम जगत में जीवन दो दिन का

हरि नाम सुमर सुखधाम जगत में जीवन दो दिन का।
पाप कपट करे माया जोड़ो, गर्व करे धन का।।
सभी छोड़ कर चला मुसाफिर, वास हुआ वन का।
सुन्दर काया देख लुभाया, लाड़ करे तन कर।।
छूटा साँस बिखर गई देही, जौं माला मन का।
यौवन नारी लग प्यारी, मौज करे मन का।
काल बली लगे तमाचा, भूल जाये ठन का।।
यह संसार स्वप्न की माया, मेला पल छिन का।
ब्रह्मनन्द भजन कर बन्दे, नाथ निरंजन का।।
हरि नाम सुमर सुखधाम जगत में जीवन दो दिन का।

मैंने जालिम तेरा क्या बिगाड़ा

मैंने जालिम तेरा क्या बिगाड़ा, तीर सीने में क्यों तूने मारा।
करता जाहिर खता कोई मेरी, क्यों अभागे को जल भरते मारा।
वन का वासी जटायें हैं सिर पर,
हाय हाय जालिम तपस्वी को मारा।
तूने अन्धों की लाठी को तोड़ा, मैं ही श्रवण था उनका सहारा।
उन पर गुजरेगी क्या मेरे कातिल, जिनके होते मरे पुत्र प्यारा।
शोक अपना नहीं है पर उनका, जिनको बेमौत तूने मारा।।
अन्धे माता–पिता है अकेले, राह कब तक देखेंगे हमारा।
श्रवण–श्रवण पुकारेंगे कब तक, उफ है जालिम तीनों को मारा।
प्यारी अम्मा क्षमा मुझको करना, हाय मरता है श्रवण तुम्हारा।
पिता–पुत्र तेरा अब जी तोड़ता है, नमस्ते करता है श्रवण तुम्हारा।
जिन को आजिज लगी हो वो जाने,
भगवान तेरी लीला है अपरम माया।
मैंने जालिम तेरा क्या बिगाड़ा, तीर सीने में क्यों तूने मारा।।

मन फूला फूला फिरे जगत में कैसा नाता रे

मन फूला फूला फिरे जगत में कैसा नाता रे, कैसा नाता रे।
माता कहे ये पुत्र हमारा, बहन कहे भाई मेरा।
भाई कहे यह भुजा हमारी, नारी कहे नर मेरा।। मन फूला फूला..
पेट पकड़ के माता रोवे, बांह पकड़ के भाई।
लपट झपट के तिरिया रोवे, हंस अकेला जाई।। मन फूला फूला..
जब तक जीवे माता रोवे, बहन रोवे इस मासा।
तेरह दिन तक पत्नी रोवे, फेर करे घर वासा।। मन फूला फूला..
चार जणा मिल गजी बनाई, चढ़ा काठ की घोड़ी,
चार कोने आग लगाई, फूंक दियो जस होरी।। मन फूला फूला..
हाड़ जले जस लाकड़ी, केश जले जस घास,
सोना जैसी काया जल गई, कोई न आयो पास।।
मन फूला फूला फिरे जगत में कैसा नाता रे।।

बैठ अकेले दो घड़ी ईश्वर के गुण गाया कर

बैठ अकेले दो घड़ी ईश्वर के गुण गाया कर।
मन मन्दिर में गाफिला झाड़ू रोज लगाया कर।
सोने में तेने रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा।
इसी तरह बरबाद तू प्राणी, करता जीवन अपना आप रहा।
प्रातः उठकर प्रेमिया सत्संग में नित जाया कर।। बैठ अकेले दो..
बार–बार मानुस तन पाना बच्चों वाला खेल नहीं।
जन्म जन्म के शुभ कर्मो का जब तक होता मेल नहीं।
नर तन पाने के लिये उत्तम कर्म कमाया कर।। बैठ अकेले दो...
पास में तेरे है दुखिया कोई, तू ने मौज उड़ाई क्या।
भूखा प्यासा पड़ा पड़ौसी, उसने रोटी खाई क्या।
पहले सब से पूछकर, फिर तू भोजन पाया कर।। बैठ अकेले दो..
देख दया उस परमेश्वर की जिसने उत्तम जन्म दिया।
सोच जरा तू मन में प्राणी, कितना है उपकार किया।
प्रातः उठकर प्राणी तू उस का शुक्र मनाया कर।
बैठ अकेले दो घड़ी ईश्वर के गुण गाया कर।।

क्या खता मेरी थी जालिम तू ने क्यों तोड़ा मुझे

क्या खता मेरी थी जालिम तू ने क्यों तोड़ा मुझे।
क्यों ना मेरी उम्र तक ही डाली पर छोड़ा मुझे।
मरना अपने सिर ले कर, तुझे क्या मिल गया।
तोड़ते ही पेड़ का सारा कलेजा हिल गया।
जिसकी रौनक था मैं बेरौनक वो डाली हो गई।
अफसोस है बच्चे से माँ की गोद खाली हो गई।
तूने मुझ को कर दिया कुरबान अपनी जान पर।
माँ मेरी रोती रही वह देख मेरी शान पर।
पत्तियाँ उड़ती फिरेंगी और मुरझा जायेगी।
धीरे–धीरे मिट्टी में मिल जायेगी खो जायेगी।
मैं भी फानी तू भी फानी, फानी सब संसार में।
क्यों जवानी में जुल्म करता फिरे संसार में।
शौक क्या कहते है तू सुन ले समझ ले जान ले।
दिल किसी का दुखाना नहीं अच्छा जान ले।
जैसे तुझ में जान है यूं फूल में भी जान है।
दोनों बेटे एक पिता के फिर ये कैसा मान है।
जबकि हिम्मत है नहीं तुझको बनाने के लिए।
फिर हक तुझ को नहीं उसको मिटाने के लिये।
क्या खता मेरी थी जालिम तू नें क्यों तोड़ा मुझे।
क्यों ना मेरी उम्र तक ही डाली पर छोड़ा मुझे।।

गुरू जी मैने अवगुण बहुत करे

गुरू जी मैने अवगुण बहुत करे।। टेक।।
जितने पैर धरे धरती पर उतने ही जीव हरे। गुरू जी मैने........
जितने पुरूष नजर देखे, उतने ही पाप किये। गुरू जी मैने........
जितनी नार नजर भर देखी। राम मंशा पाप किये। गुरू जी मैने...
दान पुण्य कुछ कर नहीं जाना दैतो के नाम करे। गुरू जी मैने.....
उन पापों की मैने बांधी गठरिया रामा, सर पर धारो ही फिरे।
तुलसी दास आधा रघुवर की हर के चरण से लगे। गुरू जी मैने....
गुरू जी मैने अवगुण बहुत करे।। टेक।।

जिस भजन में राम का नाम ना हो

जिस भजन में राम का नाम ना हो, उस भजन को गाना ना चाहिये।
चाहे बेटा कितना प्यारा हो, उसे सर पर चढ़ाना ना चाहिये।
चाहे बेटी कितनी लाड़ली हो, घर–घर में घुमाना ना चाहिये।
जिस भजन में राम का नाम ना हो, उस भजन को गाना ना चाहिये।
जिस माँ ने हमको जन्म दिया, दिल उसका दुखाना ना चाहिए।
जिस पिता ने हमको पाला है, उसे कभी सताना ना चाहिये।
जिस भजन में राम का नाम ना हो, उस भजन को गाना ना चाहिये।
चाहे पत्नी कितनी प्यारी हो, उसे भेद बताना ना चाहिये।
चाहे भैया कितना बैरी हो, उससे राज छुपाना ना चाहिये।
जिस भजन में राम का नाम ना हो, उस भजन को गाना ना चाहिये।
चाहे कितनी गरीबी आ जाये, दाता को भुलाना ना चाहिये।
चाहे कितनी अमीरा आ जाये, अभिमान दिखाना ना चाहिये।
जिस भजन में राम का नाम ना हो, उस भजन को गाना ना चाहिये।।

मैने कर लिये जतन हजार मेरा मन बस मे नहीं आता

मैने कर लिये जतन हजार मेरा मन बस में नहीं आता।
ये दुष्ट बड़ा मक्कार, उलटे मार्ग पर ले जाता।
काया गंगा यमुना नहावे, मनवा मेले तमाशे जावे।
जहाँ नाटक सिनेमा नाच, इसे राग रंग ही भाता। मैने कर लिये....
उंगली माला फिरत फिरत जावे, मन ये खटपट में लग जावे।
कहीं क्रोध ईर्ष्या डाह कहीं, लड़ने की ठहराता।। मैने कर लिये....
काया व्रत प्यास में लगे, मन तो खाने में चित पागे।
हलवा पूरी और अचार, भोजन तरह–तरह के चाहता।। मैने कर लिये...
काया आसन पर डट जावे, मन विषयों की बात चलावे।
इसको भावे मौज बहार, जा भोगों में रम जाता।। मैने कर लिये....
काया कथा शास्त्र में जावे, मन को एक बात ना भावे।
यह विषय भोग का दास, नहीं राम नाम सुहाता।। मैने कर लिये....
मैने कर लिये जतन हजार मेरा मन बस में नहीं आता।

मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणो में

मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणो में,
ये विनती है पल–पल, छिन–छिन रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में।
चाहे बैरी सब संसार बने, चाहे जीवन तुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
चाहे कष्टों ने मुझे को घेरा हो, चाहे चारो और अंधेरा हो।
पर मन ना डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
चाहे अग्नि में मुझे जलना हो, चाहे कांटों पर मुझे चलना हो।
चाहे छोड़कर देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
जीव्हा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
बस मुझ को ये ही काम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणो में।।

रे मन मुसाफिर निकलना पड़ेगा

रे मन मुसाफिर निकलना पड़ेगा, काया का घर खाली करना पड़ेगा।
भाड़े के घर को तू क्या सम्भाले, जिस दिन तुम्हें घर का मालिक निकाले।
उसका किराया भी भरना पड़ेगा। रे मन मुसाफिर निकलना पड़ेगा।।
आयेगा नोटिस जमानत ना होगी, पल्ले में गर तेरे अमानत ना होगी।
होकर के कैद तुझे जाना पड़ेगा। रे मन मुसाफिर निकलना पड़ेगा।।
यमराज की जब अदालत चढ़ोगे, पूछेगा हाकिम तुम क्या कहोगे।
पापों की अग्नि में जलना पड़ेगा। रे मन मुसाफिर निकलना पड़ेगा।।
मेरी बात मानों यमराज तो मनायेगे, तेरे कर्म दंड तुझे मार कर भगायेंगे।
घोर नर्क बीच दुःख सहना पड़ेगा। रे मन मुसाफिर निकलना पड़ेगा।।
कहे बृह्मनन्द फिरेगा तू रोता, लख चौरासी में खायेगा तू गोता।
फ़िर–फिर जन्म तुझे भरना पड़ेगा। रे मन मुसाफ़िर निकलना पड़ेगा।।

शरण में आये हैं हम तुम्हारी

शरण में आये हैं हम तुम्हारी दया करो हे दयालू भगवन।
संभालो बिगड़ी दशा हमारी दया करो हे दयालू भगवन।
न हम में बल है न हम में शौकत,
न हम में साधन न हम में भक्ति।
तुम्हारे दर के है हम भिकारी, दया करो हे दयालू भगवन।।
जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक,
जो तुम पिता हो तो हम हैं बालक।
जो तुम हो ठाकुर तो हम हैं पुजारी,
दया करो हे दयालू भगवन।।
सुना है हम है अंश तुम्हारे, तुम हो सच्चे प्रभु हमारे।
ये है तो सुधो क्यों बिसारी, दया करो हे दयालू भगवन।।
बुरे हैं तो हम हैं तो तुम्हारे, भले हैं जो हम तो तुम्हारे।
तुम्हारे हो कर भी हम दुखारी, दया करो हे दयालू भगवन।।
प्रदान कर दो महान शक्ति, भरो हमारे ज्ञान में भक्ति।
तभी कहावोगे ताप हारी, दया करो हे दयालू भगवन।।
न होगी जब तक कृपा की दृष्टि,
न होगी जब तक कृपा की वृष्टि।
न तुम भी तब तक न्यायकारी, दया करो हे दयालू भगवन।।
हमें तो बस टेक नाम की है, पुकार ये राधेश्याम की है।
तुम ही जानो निरंकारी, दया करो हे दयालू भगवन।।

गुरू जी मैने अवगुण बहुत करे

गुरू जी मैने अवगुण बहुत करे।। टेक।।
जितने पैर धरे धरती पर उतने ही जीव हरे। गुरू जी मैने........
जितने पुरूष नजर देखे, उतने ही पाप किये। गुरू जी मैने........
जितनी नार नजर भर देखी। रामा मंशा पाप किये। गुरू जी मैने...
दान पुण्य कुछ कर नहीं जाना दैतो के नाम करे। गुरू जी मैने.....
उन पापों की मैने बांधी गठरिया रामा, सर पर धारो ही फिरे।
तुलसी दास आशा रघुवर की हर के चरण से लगे। गुरू जी मैने....
गुरू जी मैने अवगुण बहुत करे।। टेक।।

हमने आंगन नहीं बुहारा कैसे आयेंगे भगवान

हमने आंगन नहीं बुहारा कैसे आयेंगे भगवान।
मन का मैल नहीं धोया तो कैसे आयेंगे भगवान।।
हर कोने में कलमरा कषाय की लगी हुई ढेरी, नहीं ज्ञान की किरण।
कहीं पर हर कोठरी अंधेरी, आंगन चौबारा हैं अंधियारा कैसे आयेंगे भगवान
हृदय हमारा पिघल ना पाया जब देखा दुखियारा।
किसी पंथ भूले ने हमसे पाया नहीं सहारा।
सुखी है करूणों की धारा कैसे आयेंगे भगवान।
अन्तर के पट खोल देख लो ईश्वर पास मिलेगा।
हर प्राणी में ही परमेश्वर का आभास मिलेगा।
सच्चे मन से नहीं पुकारा कैसे आयेंगे भगवान।।
निर्मल मन हो तो रघुनायक शबरी के घर जाते।
श्याम सूर की बांह पकड़ते साक विदुर घर खाते।
इस पर हमने नहीं विचारा कैसे आयेंगे भगवान
हमने आंगन नहीं बुहारा कैसे आयेंगे भगवान।।

कभी कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े

कभी कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े।
जाना था गंगापार प्रभु केवट की नाव चढ़े।
अवध छोड़े प्रभु बन को धाये, सिया राम लखन गंगा तट आये।
केवट मन ही मन हर्षाया, घर बैठे प्रभु दर्शन पाया।
हाथ जोड़ कर प्रभु के आगे, केवट मगन खड़े।। कभी–कभी भगवान...
प्रभु बोले तुम नाव चलावो, पार हमे केवट पहुंचावो।
केवट बोला सुनो हमारी, चरण धुलि की माया भारी।
मैं गरीब हूँ नैया मेरी, नारी ना होय पड़े।। कभी–कभी भगवान....
केवट दौड़कर जल भर लाया, चरण धोय चरणामृत पाया।
वेद ग्रन्थ जिसके यश गावे, केवट उन को नाव चढ़ावें।
बरसे फूल गगन से ऐसे, भक्तों के भाग्य बड़े।। कभी–कभी भगवान...
चली नाव गंगा की धारा, सियाराम लखन को पार उतारा।
देने लगे प्रभु नाव उतराई, केवट कहे नहीं रघुराई।
पार किया मैने प्रभु तुमको, अब तुम मुझ को पार करो।
कभी कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े।।

पागल सब संसार देखा, पागल सब संसार

पागल सब संसार देखा, पागल सब संसार।
ये जग दीवानों की बस्ती, देखा सोच विचार।।
कोई देखा धन का पागल, पूजा करता धन की।
धन कारण सुख चैन गंवाये, मिटी ना इच्छा मन की।
अंत समय धन संग ना जावे, जोड़–जोड़ गया हार।। पागल सब.......
पल–पल बीती जाय जवानी, जीवन है ढल जाना।
जिस जीवन का मान करे तू, वो यौवन दिन चार।। पागल सब.......
कोई देखा ज्ञान का पागल, पढ़–पढ़ नैन गवायें।
प्रेम बिना कभी ज्ञान ना उपजे, वृथा जन्म गवायें।
सच्चा ज्ञान उसी ने पाया, करता जो उपकार।। पागल सब.........
पागल सब संसार देखा, पागल सब संसार।

मेरा आप की कृपा से सब काम हो रहा है

मेरा आप की कृपा से सब काम हो रहा है।
करते हो तुम कन्हैया मेरा नाम हो रहा है।
पतवार के बिना ही मेरी नाव चल रही है।
हैरान है जमाना मंजिल जो मिल रही है।
करता नहीं मैं कुछ भी सब काम हो रहा है।। मेरा आप की.....
तुम साथ हो जो मेरे किस चीज की कमी है।
किसी ओर चीज की अब दरकार भी नहीं है।
तेरी दया से अब दास मालामाल हो रहा है।। मेरा आप की......
मैं तो नहीं हूँ काबिल तेरा पार कैसे पाऊँ।
इस टूटी हुई वाणी से गुणगान कैसे गाऊँ।
तेरी प्रेरणा से ही ये सब कमाल हो रहा है।
मेरा आप की कृपा से सब काम हो रहा है।।

क्र.सं.	भजन	पृष्ठ सं0
34.	भगवान तेरी नैय्या उस पार लगा देना	17
35.	हो जाये बंद वाणी, तेरा नाम रटते-रटते	18
36.	उठ जाग रे मुसाफिर किस नींद सो रहा है	18
37.	तू काहे करे अभिमान खिलौने माटी के	19
38.	उत्तरा का विलाप	19
39.	कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो	20
40.	भाव के भूखे हैं भगवान	20
41.	तुम ही माता-पिता तुम ही हो	20
42.	जब तक है जिन्गी, फर्सत ना मिलेगी काम से	21
43.	क्रोध ना छोड़ा, झूठ ना छोड़ा	21
44.	इतनी शक्ति हमें देना दाता	22
45.	तेरे दर को छोड़ कर किस दर पर जाऊँ मैं	23
46	बजरंग बली मेरी नाव चली	23
47.	मेरे बाबा के दरबार में सब लोगों का खाता	24
48.	दुःख दूर कर हमारा संसार के खिवैया	24
49	राम नाम सुखदाई भजन करो भाई	25
50.	इस तन पर दया करना	25
51.	आरती मंगलकारी की	26
52.	फूलों से तुम हंसना सीखो, भवरों से गुनगुनाना	26
53.	न यह तेरा न यह मेरा, मन्दिर है भगवान का	27
54.	कहीं फिरे मनवा कहीं फिरे माला	27
55.	मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में	28
56.	रे मन मुसाफिर निकलना पड़ेगा	28
57.	निर्बल के प्राणस पुकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे	29
58.	राम का नाम ले लो घड़ी दो घड़ी	29
59.	मन फूला फूला फिरे जगत में कैसा नाता रे	30
60.	बैठ अकेले दो घड़ी ईश्वर के गुण गाया कर	30
61.	हरि नाम सुमर सुखधाम जगत में जीवन दो दिन का	31
62.	मैंने जालिम तेरा क्या बिगाड़ा	31
63.	हे दयामय हम सबो को शुद्धताई दीजिए	32
64.	मैं राम नाम गुण गाऊँ	32
65.	राम के नाम से प्यार कर लीजिये	33
66.	सुना है तारे है, तुमने लाखों	33
67.	शरण में आये हैं हम तुम्हारी	34

क्यों जिन्दगी भरम में गंवाती फिरो

क्यों जिन्दगी भरम में गंवाती फिरो।
और लोक लज्जा धर्म को लुटाती फिरो।
सास ननद से राजी ना बोलो, बाबा संतो के चरण दबाती फिरो।
संध्या पूजा भजन ना होता, और कवरों पर फूल चढ़ाती फिरो।
अपने पति का आदर ना करती, और पंडो को भोजन जिमाती फिरो।
होवे बीमार परहेज ना करती, गन्डे ताबीज बंधवाती फिरो।
कहीं मुर्गा कहीं बकरा कबूलों, कहीं काली पर बकरा चढ़ाती फिरो।
ऐसे ही कर्मो से दुःख पावो, जीव हिंसा में पाप कमाती फिरो।
ईश्वर पर विश्वास करो तुम, क्यों मूर्ख बनी घर लुटाती फिरो।
क्यों जिन्दगी भरम में गंवाती फिरो।।

मुझे ला दो भजन की वो ही माला

मुझे ला दो भजन की वो ही माला।
वो ही माला बाबा वो ही माला। मुझे ला दो भजन की वो ही माला।।
जो माला मीरा ने फेरी, जहर बना अमृत प्याला। मुझे ला दो..............
जो माला द्रोपदी ने फेरी, चीर बढ़ा गये नन्दलाला। मुझे ला दो...........
जो माला भिलनी ने फेरी, बेरों को खा गये प्रतिपाला। मुझे ला दो.......
जो माला नरसी ने फेरी, भात भरा गये गोपाला। मुझे ला दो...............
जो माला हनुमंत ने फेरी, सीना फाड़ दिखा डाला। मुझे ला दो...........
जो माला भक्तों ने फेरी, भूतों का कर दिया मुंह काला। मुझे ला दो...
मुझे ला दो भजन की वो ही माला।

काया का पिजंरा डोले एक श्वांस का पंछी बोले

काया का पिजंरा डोले एक श्वांस का पंछी बोले।
तन नगरी मन है मंदिर, परमात्मा जिस के अन्दर।
दो नैन है पाक सनन्दर, ओ पापी पाप को धौ ले। काया का पिंजरा............
आने की शहादत जाना, जाने से क्या घबराना।
दुनियां है मुसाफिर खाना, अब जाग जगत से या सो ले। काया का पिंजरा....
चलते हैं नित शौक के झोले, अब सोच विचार तू कर ले।
दिन रात तराजू के पल्ले, जो नेकी बंदी को तोले। काया का पिंजरा............
माँ–बाप पति पत्नी का, कोई भी कोई नहीं किसी का।
झगड़ा है जीते जी का, क्यों अजीज भेद को खोले। काया का पिंजरा............
काया का पिजंरा डोले एक श्वांस का पंछी बोले।

अपनी बात............

आपकी सेवा में यह भजन माला पुस्तक प्रस्तुत करते हुए निवेदन करना है कि परम पूज्य माता–पिता के आशीर्वाद से ही यह कार्य सम्पन्न हो पाया है। उनके आशीर्वचन हमें सदैव प्रेरणा देते रहें और हमें भगवान की कृपा से जीवन में इतना सब कुछ मिला जिसके सम्भवतः हम अधिकारी भी नहीं थे।

भजनों के संकलन में यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो सुधी पाठक क्षमा करेंगे। ऐसी कामना है।

माम कुमार गर्ग

मितलेश गुप्ता

तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आली...

तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलीशान।
किसने जानी तेरी माया, किस ने भेद तुम्हारो पाया।
हारे ऋषिमुनि कर ध्यान, बना मन मन्दिर आलीशान।।
तू ही जल में तू ही थल मे, तू ही मन में तू ही बन में।
तेरा रूप अनूप महान। बना मन मन्दिर आलीशान।।
तू हर गुल में, तू बुल–बुल में, तू हर डाल के पातन में।
तू हर दिल में मूर्ति महान, बना मन मन्दिर आलीशान।।
तूने राजा रंक बनाये, तूने भिक्षुक राज बिठाये।
तेरी लीला ऐसी महान, बना मन मन्दिर आलीशान।।
तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलीशान।।.

पकड़ लो हाथ बनवारी, नहीं तो डूब जायेंगे...

पकड़ लो हाथ बनवारी, नहीं तो डूब जायेंगे।
हमारा कुछ ना बिगड़ेगा, आपकी लाज जायेगी।
कई भक्तों को तारा है, तो तारो हमसे पतितों को,
तभी आप दुनियाँ में, पतित पावन कहलाओगे। पकड़ लो...
धरी है पाप की गठरी, हमारे सर पर ये भारी,
वजन पापों का है भारी, इसे कैसे उठायेंगे। पकड़ लो ह...
दर्द दिल का कहें किससे, सहारा और ना कोई।
सुनेंगे आप ही मोहन, और किस को सुनायेंगे। पकड़ लो...
तुम्हारे ही भरोसे पर, जमाना छोड़ बैठे हैं,
जमाने की तरफ देखो, उसे कैसे निभायेंगे।। पकड़ लो ह...
पड़ी है भंवर में नैय्या, प्रभु अब डूब जायेगी।
खिबैया आप बन जावो, तो बेड़ा पार हो जाये।
पकड़ लो हाथ बनवारी, नहीं तो डूब जायेंगे।

क्र.सं.	भजन	पृष्ठ सं
68.	गुरू जी मैने अवगुण बहुत करे	34
69.	हमने आंगन नहीं बुहारा कैसे आयेंगे भगवान	35
70.	कभी कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े	35
71.	क्या खता मेरी थी जालिम तू ने क्यों तोड़ा मुझे	36
72.	गुरू जी मैने अवगुण बहुत करे	36
73.	पागल सब संसार देखा, पागल सब संसार	37
74.	मेरा आप की कृपा से सब काम हो रहा है	37
75.	जिस भजन में राम का नाम ना हो	38
76.	मैने कर लिये जतन हजार मेरा मन बस में नहीं आता	38
77.	क्यों जिन्दगी भरम में गंवाती फिरो	39
78	मुझे ला दो भजन की वो ही माला	39
79.	काया का पिंजरा डोले एक श्वांस का पंछी बोले	39
80.	राम कहने का मजा जिस की जुबां पर आ गया	40
81.	साधु भतेरे साधन करने वाला कोई–कोई	40
82.	भगवान तुम्हारे दर्शन की मेरी अंखियाँ मचली जाती है	41
83.	एकादशी व्रत करो नर–नार	41
84.	तेरे दर पर आना मेरा काम है	42
85.	मन की तरंग मार लो, बस हो गया भजन	42
86.	पार्वती महारानी तुम्हारी महिमा न्यारी है	42
87.	मेरी इमदाद को ऐ बांसुरी वाले आ जा	43
88.	रे रात भर का डेरा रे सवेरे चले जाना है रे	43
89.	सो गया सुपन आया है	44
90.	हे पिंजरे वाली मैना भजन करले श्री राम का	44
91.	बिन काज आज महाराज लाज गई मेरी	45
92.	दर्शन दो घनश्याम मेरी अखियाँ प्यासी रे	45
93.	अजब हैरान हूँ भगवन, तुम्हें कैसे रिझाऊँ मैं	46
94.	सीता राम राम सीता राम सीता राम कहिये	46
95.	जोड़–जोड़ भर लिये खजाने	47
96.	मैली चादर ओढ़ के कैसे द्वारे तुम्हारे आऊँ	47
97.	राम नाम के हीरे मोती में बिखराऊँ गली–गली	48
98.	बड़ा है कौन दोनों में, पतित अथवा पतित पावन	48
99.	तार दिया सारा जमाना रे	49
100.	राम खुद गरज जमाना है	49
101.	हो जावो तैयार एक दिन चलना है	50
102.	पिता अधिकार है तुम को, हमें गिरि से गिराने का	50

विवरणिका

क्र.सं.	भजन	पृष्ठ सं
1.	दाता एक राम, भिखारी सारी दुनिया	01
2.	उद्धार करो भगवान तुम्हारी शरण पड़े	01
3.	राम का नाम लेकर जो मर जायेंगे	02
4.	सोच समझकर यतन करो भाई	02
5.	रामा रामा रटते–रटते बीती रे उमरिया	03
6.	मुखड़ा क्या देखे दर्पण में	03
7.	भगवान भगत के वश में होते आये	04
8.	संदेशा राम का	04
9.	भगवान जरा मुझ पर अपनी तो कृपा कर दो	05
10.	किसी के काम जो आये उसे इंसान कहते हैं	05
11.	मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा ना कोई	06
12.	इतना तो करना स्वामी	06
13.	नजर भर देख ले मुझको	07
14.	तेरा मन दर्पण कहलाये	07
15.	शिव शंकर भोले भोले	08
16.	जब तेरी डोली निकाली जायेगी	08
17.	गाइये गणपति गज वन्दन	09
18.	राम जी करेंगे बेड़ा पार	09
19.	तूने खूब रचाया भगवान खिलौना माटी का	09
20.	राम जी के नाम से पत्थर भी तारे	10
21.	सारी उम्र गई धन्धों में	10
22.	कर ले जतन हजार तोता उड़ जाना	11
23.	क्या हाल कहूँ अपने मन का	11
24.	है चार दिन की चाँदनी	12
25.	नटवर नगर नन्दन, भजो रे मन गोविन्दा	13
26.	आनन्द रूप भगवन किस भांति तुम को पाऊँ	13
27.	तीन बार भोजन, भजन एक बार	14
28.	थके हैं लाखों ज्ञानी ध्यानी	14
29.	तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलीशान	15
30.	पकड़ लो हाथ बनवारी, नहीं तो डूब जायेंगे	15
31.	जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है	16
32.	दुःख तो है मानव की सम्पत्ति	16
33.	भिलनी बुहारे रास्ता, आवेंगे राम जी	17

भगवान जरा मुझ पर अपनी तो कृपा कर दो

भगवान जरा मुझ पर अपनी तो कृपा कर दो।
इस दीन का भी दामन भक्ति से अपनी भर दो।। भगवान
आज्ञा तेरी का पालन, निशदिन करूं में स्वामी।
भिक्षुक है नाथ तेरा भक्ति का मुझ का वर दो।। भगवान ज
पुरूषार्थ करकै मुझ को मिल जाये नाथ जो कुछ।
उस में ही दयाभय संतोष और सबर दो।। भगवान जरा......
माता–बहन और कन्या, समझ परायी नारी।
सम्भाव सब को देखूं ऐसी मुझे नजर दो।। भगवान जरा.....
कर जोड़कर के तुम से है नाथ अब विनय ये
अपना ही ध्यान मुझ को नित शाम और सहार दो।। भगवा

किसी के काम जो आये उसे इंसान कहते हैं

किसी के काम जो आये उसे इंसान कहते हैं,
पराया दर्द अपनाये उसे इंसान कहते हैं।
कभी धनवान है कितना, कभी इंसान है निर्धन,
कभी सुख है कभी दुःख है, इसी का नाम ही जीवन।
जो मुश्किल से घबराये उसे इंसान कहते हैं।। किसी के
ये दुनिया एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर,
कोई हंस–हंस के जीता है, कोई जीता है रो–रो कर।
जो गिर कर सम्भल जाये, उसे इंसान कहते हैं।। किसी
अगर गलती रूलाती है, तो राह भी दिखाती है,
बसर गलती का पुतला है, ये अक्सर होती जाती है।
जो गलती करके पछताये, उसे इंसान कहते हैं।। किसी
अकेले ही जो खा–खा कर सदा गुजारा करते हैं,
यों भरने को तो दुनियाँ में, पशु भी पेट भरते हैं।
जो मिलकर बांट कर खाये उसे इंसान कहते हैं।
किसी के काम जो आये उसे इंसान कहते हैं।।

राम का नाम लेकर जो मर जायेंगे

राम का नाम लेकर जो मर जायेंगे।
वे अमर नाम दुनिया में कर जायेंगे।। राम का नाम.............
ये न पूछो कि मर कर किधर जायेंगे।
वे जिधर भेज देंगे, उधर जायेंगे।। राम का नाम...................
टूट जाये ना माला कहीं प्रेम की।
कीमती रत्न सब बिखर जायेंगे।। राम का नाम....................
यह मानो न मानो खुशी आप की।
हम मुसाफिर है कल अपने घर जायेंगे।। राम का नाम.......
राम का नाम लेकर जो मर जायेंगे।

सोच समझ कर यतन करो भाई

सोच समझकर यतन करो भाई भव सागर से तिरने का।
कलयुग में नर ऐसे होंगे फिकर उदर के भरने का।।
चौदह दिन तक भोजन करती, चढ़ा फिकर इकादशी का।
कौड़ी--कौड़ी माया जोड़ी जोड़ जमी में रखता है।
जिसकी लहनी वही पायेगा पापी वै–वै मरता है।।
सोच समझकर यतन करो.............................
माया जोड़ करी है बटली, तदवीर करो कहीं धरने का।
मूर्ख पल की खबर नहीं नाजुक दिन आया चलने का।।
सोच समझकर यतन करो.............................
भवसागर एक गहरी नदिया उसका उतरना है भारी।
धरमी–धरमी पार उतर गये पापी गोते खाता है।।
सोच समझकर यतन करो.............................
ऊँचे नीचे महल चिनाये, गहरी नींव धराता है।
चलने के दिन धोरे रह गये, रहने को दिल चाहता है।।
सोच समझकर यतन करो.............................
मनकर हितकर चितकर चाकर चौरासी से तिरने का।
तुलसीदास घनश्याम सांवरे, ये पद तो है उतरन का।।
सोच समझकर यतन करो भाई भव सागर से तिरने का।
कलयुग में नर ऐसे होंगे फिकर उदर के भरने का।।

दाता एक राम, भिखारी सारी दुनिया।

दाता एक राम, भिखारी सारी दुनिया।
राम एक देवता, पुजारी सारी दुनिया।।
द्वारे पे उसके जाके जो कोई भी पुकारता,
परम कृपा से अपनी भव से उबारता।
ऐसे दीनानाथ पे बलिहारी सारी दुनिया,
दाता एक राम...............................
दो दिन का जीवन प्राणी कर ले विचार तू,
प्यारे प्रभु को अपने मन में पुकार तू।
छोड़ कर प्रपंच सारे, करले विचार तू,
बिना हरी नाम के दुखिआरी सारी दुनिया।।
दाता एक राम...............................
नाम का प्रकाश जब तेरे अन्दर जायेगा,
प्यारे श्री राम का तू दर्शन पायेगा।
वही एक ज्योति है, अंधियारी सारी दुनिया,
दाता एक राम, भिखारी सारी दुनिया।।

उद्धार करो भगवान तुम्हारी शरण पड़े

उद्धार करो भगवान तुम्हारी शरण पड़े,
भव पार करो भगवान, तुम्हारी शरण पड़े।।
कैसे तुम्हारी शरण में आऊँ, कैसे तुम से ध्यान लगाऊँ।
हृदय जगा दो ज्ञान तुम्हारी शरण पड़े।।
उद्धार करो भगवान...............................
तुम ही श्यामल कृष्ण मुरारी, राम तुमहीं गणपति त्रिपुरारी
तुम ही बने हनुमान।। उद्धार करो भगवान.......................
कैसे तुम्हारी शरण में आऊँ, कैसे तुम से ध्यान लगाऊँ।
हे प्रभु दया निधान, उद्धार करो भगवान...........................

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा ना कोई

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा ना कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरे पति सोई।। मेरे तो गिरधर.........
भाई छोड़ा बन्धु छोड़ा, छोड़ा सगा सोई।
साधु संग बैठे–बैठे लोकलाज खोई।। मेरे तो गिरधर...........
असुवन जल सींच–सींच प्रेम बेल बोई।
अब तो बेल फैल गई, आनन्द फल होई।। मेरे तो गिरधर.....
भगत देख राजी हुई, जगत देख रोई।
विष का प्याला राणा भेजा, पीकर मगन होई।
मीरा प्रभु लगन लागी, होन होय सो होई।।
मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा ना कोई।।

इतना तो करना स्वामी

इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकले।
गोविन्द नाम लेकर, फिर प्राण तन से निकले। इतना तो करना..
श्री गंगा जी का तट हो, यमुना जी का वंशी वट हो।।
मेरा साँवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकले। इतना तो करना..
वृन्दावन का स्थल हो, मेरे मुख में तुलसी दल हो।
विष्णु चरण का जल हो, जब प्राण तन से निकले।। इतना तो करना..
सन्मुख सांवरा खड़ा हो, मुरली का स्वर भरा हो।
तिरछा चरण धरा हो, जब प्राण तन से निकले।। इतना तो करना..
सिर मोहना मुकुट हो, मुखड़े पर काली लट हो।
वही ध्यान मेरे घट हो; जब प्राण तन से निकले।। इतना तो करना..
केसर तिलक हो आला, मुख चन्द्र सा उजाला।
डांलू गले में माला, जब प्राण तन से निकले।। इतना तो करना..
कानों जड़ाऊँ बाली, लटकी लटे हो काली।
देखूँ छटा निराली, जब प्राण तन से निकले।। इतना तो करना..
पिताम्बरी कसी हो, होंठो पर कुछ हंसी हो।
छवी ये ही मन बसी हो, जब प्राण तन से निकले।। इतना तो करना..

नजर भर देख ले मुझको

नजर भर देख ले मुझको, शरण में आ पड़ा तेरी।
तेरा दरबार है ऊँचा, कठिन जाना है मंजिल का।
हजारों दूत मारग में खड़े हैं, पंथ को धेरी।। नजर भर देख.......
नहीं है जोर पैरों में, न दूजा संग में साथी।
सहारा दे मुझे अपना करो, ना नाथ अब देरी।। नजर भर देख...
नहीं है भोग की वाँछा न मन में मोक्ष पाने की।
प्यास दर्शन है मन में, सफल कर आस को मेरी।। नजर भर दे
क्षमा कर दोष को मेरे, विरद को देखकर अपने।
वो ब्रह्मानन्द कर करूणा, मिटा दे जन्म की फेरी।
नजर भर देख ले मुझको, शरण में आ पड़ा तेरी।

तेरा मन दर्पण कहलाये

तेरा मन दर्पण कहलाये। भला बुरा क्यों देखे और दिखाये,
मन ही देवता मन ही ईश्वर, मन से बड़ा ना कोय।
मन उजियारा जब–जब फैलें, जब उजियारा होय।
इस उजले दर्पण में प्राणी धूल ना जमने पाये।
सारे मन दर्पण में होय, तेरा मन दर्पण कहलाये।।
सुख की कलियाँ, दुःख के कांटे मन सबका आधार।
जग से कोई भाग ले, चाहे मोरा मन दर्पण कहलाये।।
तन की दौलत ढलती छाया, मन का धन अनमोल।
तन के कारण मन के धन को, मत माटी में तोल।
मन की कर भुलाने वाला हीरा जन्म गवायें।
तेरा मन दर्पण कहलाये।।

गाइये गणपति गज वन्दन

गाइये गणपति गज वन्दन, शंकर सुमन भवानी के नन्दन।
सिद्धि सदन गज भवन विनायक, कृपा सिन्धु सुन्दर सब लाय
मोदक प्रिय मुद मंगलदाता, विद्या बारीधि बुद्धि विधाता।
मांगत तुलसी दास कर जोरि, बसहिं राम–सिय मानस मोरे।।
गाइये गणपति गज वन्दन

राम जी करेंगे बेड़ा पार

तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार, उदासी मन काहे को करे।
नैया कर दे प्रभु के हवाले, लहर–लहर हरी आप सम्भालें।
हरी आप ही उतारें तेरा भार, निराशी मन काहे को करें।।
काबू में मझधार उसी के, हाथों में पतवार उसी के।
बाजी जीत लेवो चाहे तुम हार।। उदासी मन काहे..................
अगर निर्दोष तुझे क्या डर है, पग–पग पर साथी ईश्वर है।
जरा भावना से लीजिये पुकार।। उदासी मन काहे..................
सहज किनारा मिल जायेगा, परम सहारा मिल जायेगा।
डोरी सौंप दो उसी के हाथ। उदासी मन काहे..................
कोई देखा ज्ञान का पागल, पढ़–पढ़ नैन गवायें,
प्रेम बिना कभी ज्ञान ना, उपजे विरथा जन्म गंवायें।
सच्चा ज्ञान उसी ने पाया, करता जो उपकार। उदासी मन
पागल सब पागल संसार देखा पागल सब संसार।
तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार, उदासी मन काहे को करे।

तूने खूब रचाया भगवान खिलौना माटी का

तूने खूब रचा भगवान खिलौना माटी का,
पांव दिये तीर्थ करने को, हाथ दिये कर दान।। खिलौना म
नाक देई मुखड़े की शोभा, कान दिये सुन ज्ञान।। खिलौना
नैन दिये दर्शन करने को, जीभ देई रट राम।। खिलौना मा
तूने खूब रचाया भगवान खिलौना माटी का,

है चार दिन की चाँदनी

है चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात है।
चपल चाँदनी चन्द का चार दिनों की होय,
फिर अंधेरी रात है, समझ लेवो सब कोय।।
क्यों फूलता है द्रव पर, अति भूलता निज कर्म को,
क्यों धूल में नाहक मिलाता, प्राण प्यारे धर्म को।
रहने ना पावेगी सदा, जो वन रही अब बात है।
है चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात है।.........................
सुत–सता द्वारा दी जो आनन्द दाता है अभी,
मर पंच पैडी ये फिरेंगे तू मरेगा जब कभी।
कह रहा झक मार कर, मेरी तात है मेरी मात है,
है चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात है।.........................
जिसने किया इतना बड़ा वैभव दिया है आप को,
रख हाथ दिल पर सच बता सुमरा कभी उस बाप को।
झूठे प्रपंच अनेक रच कर क्यों कमाता पाप है।।
है चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात है।.........................
सभी पड़े रह जायेंगे अति शुभ जो अस्थान है,
कुछ काम आवेंगे नहीं सब मीत चित्र समान है।
निसंसार से संसार की छवि देख क्यों मुस्कात है।।
है चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात है।.........................
नजर भर देख पर स्त्रियों को क्यों नराधम घूरता,
सब धूल में मिल जायेगी, तेरी एक दिन क्रूरता।
क्यों पेट पर पशु की तरह निशश्क रहा बुकलात है।।
है चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात है।.........................
यमराज आयेंगे पकड़ने जब चले ना शूरता,
बंध जायेगा यम खम्भ से तब रंग ना लोये मूढ़ता।
ऋतु सर्द आवे अवश्य जाना चाहत बरसात है।।
है चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात है।.........................
मत मूंद आंखे चल ऊपर उठा चक्षु चर्म को,
ले समझ बुद्धि विचार से ले सोच अपने कर्म को।
फिर अंत में पछतायेगा जब बिगड़ जावे बात है।।
है चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात है।.........................
है लक्ष्मी चंचल बड़ी सब भोग रोग समान है,
जो समझ रखे दुःख बहुत वे सब दुःखों की खान हैं।
जो इन्हे अपनात है वो सब तरह दुःख पात है।।
है चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात है।.........................

कर ले जतन हजार तोता उड़ जाना

कर ले जतन हजार तोता उड़ जाना।
ये तोता है बड़ा अनोखा, एक दिन देवे निश्चित धोखा।
क्या सोता चादर तान, तोता उड़ जाना........करले जतन..
इस तोते का नहीं ठिकाना, इसे निकल जरूरी जाना।
चाहे रो–रो हो हैरान।। तोता उड़ जाना........करले जतन
जब पिंजरे से उड़ जावे, पकड़ो जितना हाथ ना आवे,
लम्बी भरे उड़ान। तोता उड़ जाना........करले जतन..........
योगी जनो ने जोर लगाया,
नहीं किसी के काबू आया, हुआ जतन बेकार।
तोता उड़ जाना........करले जतन हजार...........
इससे भैय्या ओम उच्चारे, ओम नाम ह्रदय में डारो,
हो जाये बेड़ा पार, तोता उड़ जाना............
करले जतन हजार तोता उड़ जाना।

क्या हाल कहुँ अपने मन का

क्या हाल कहुँ अपने मन का, आराम तो है पर चैन नहीं
घर में बहु दो और बच्चे हैं, भोजन भी अच्छे मिलते हैं।
भोगों से भरा समुन्द्र है, आराम तो है पर चैन नहीं।।
बिजली के पंखे चलते हैं, नौकर भी मेरे अच्छे हैं,
एयर कंडीशन कमरे में, आराम तो है पर चैन नहीं,
ये नशा भी खूब चढ़ा धन का, ऊपर से मान बड़प्पन का
इस माया वाले दफ्तर में, आराम तो है पर चैन नहीं,
क्या हाल कहुँ अपने मन का, आराम तो है पर चैन नहीं

राम जी के नाम से पत्थर भी तारे

राम जी के नाम से पत्थर भी तारे,
जो ना भजे राम को वो हे किस्मत के मारे।
राम जी के नाम को शिव जी ने ध्याया,
तुलसी ने राम पर सर्वस लुटाया।
कबीरा भजन कर हुये मतवारे।। जो ना भजे.........................
राम–नाम अमृत राम नाम चन्दन,
राम नाम देव ध्यावे संत करें बन्धन/वदंन/जो ना भजे
महावीर राम नाम ह्रदय में डारे।। जो ना भजे.........................
राम–राम–राम भजो राम राम ही ध्याओ,
राम नाम प्रेम–ज्योति घर–घर जगावों।
राम ही शरण होवो पल ना गंवाओं।
जो ना भजे वो हैं किस्मत के मारे,
राम जी के नाम से पत्थर भी तारे।
जो ना भजे राम को वो हे किस्मत के मारे।

सारी उम्र गई धन्धों में

सारी उम्र गई धन्धों में, तुम पर राम भजन ना होय।
सारा दिन धन्धों में खोया, रात पड़े जाये सोय,
दिन निकले फिर वहीं धन्धा, फुरसत कैसे होय।। सारी उम्र गई...
बालापन गया खेल–कूद में गया जवानी सोय,
आया बुढ़ापा खत्म हुआ तेरा काम ना पूरा होय।। सारी उम्र गई...
काम–काम में चाम सुखाया, नहीं भजन फिर होय,
तेरी मेरी करते डोले, भजन कहाँ से होय।। सारी उम्र गई...........
पाप गठरिया सिर पर बाँधे, रहा भटकता रोय,
सारे ठाठ पड़े रह जायें, पल में तैयारी होय।। सारी उम्र गई.......
पुण्य–धर्म तू ने कुछ नहीं कीना, घर में राखा जोड़,
कहत कबीर सुनो भई साधों, मूड पकड़ कर रोये।
सारी उम्र गई धन्धों में, तुम पर राम भजन ना होय।

नटवर नागर नन्दा, भजो रे मन गोविन्दा

नटवर नागर नन्दा, भजो रे मन गोविन्दा।
श्याम सुन्दर मुख चन्दा, भजो रे मन गोविन्दा।।
तू ही नटवर, तू ही नागर, तू ही बाल मुकन्दा।। नटवर न
सब देवन में कृष्ण बड़े है जो तारो में चन्दा।
सब सखियों में राधा जी बड़ी है, ज्यों नदियों में गंगा।
ध्रुव तारे प्रहलाद उवारे, नरसिंह रूप धरन्दा।। नटवर नाग
वृन्दावन में रास रचायो, नाचत बाल मुकन्दा।। नटवर नाग
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, काटो यम का फन्दा।
नटवर नागर नन्दा, भजो रे मन गोविन्दा।

आनन्द रूप भगवन किस भांति तुम को पाऊँ

आनन्द रूप भगवन किस भांति तुम को पाऊँ।
तेरे समीप स्वामी में किस तरफ से आऊँ। आनन्द रूप.....
सुखमूल भक्ति रूपम मंगल कुशल अनुपम।
घड़ियाल शंख तैरे क्या सन्मुख तेरे बजाऊँ। आनन्द रूप...
अनुपम परम छवाले बिन रंग रस रसीले,
कटक सखा है फुलवा क्या सिर तेरे चढाऊँ। आनन्द रूप.
कोटा नु कोट भूमि उस पर असंख्य प्राणी,
जगदीश अपनो नम्बर में कौन सा गिनाऊँ। आनन्द रूप....
श्री लक्ष्मी है तेरी निशदिन चरण की दासी,
तांबे का एक पैसा मैं नाथ क्या चढ़ाऊँ। आनन्द रूप.......
गंगा है तेरी दासी, सेवक है इन्द्र तेरा।
तेरे शरीर पर क्या दो चुल्लू जल चढ़ाऊँ। आनन्द रूप.....
छोटे से दास तेरे रवि चन्द्र है उपस्थित
करते हैं नित उजाला, घृत दीप क्या जलाऊँ। आनन्द रूप
विनती किशोर की है निशदिन यही दया मय,
हृदय में लौ हो तेरी आँखों में मैं समाऊँ।
आनन्द रूप भगवन किस भांति तुम को पाऊँ।।

रामा रामा रटते-रटते बीती रे उमरिया

रामा रामा रटते–रटते बीती रे उमरिया।
रघुनन्दन कब आवोगे, भिलनी की डगरिया।। रामा–रामा....
मैं शबरी भिलनी की जाई, भजन भव ना जानू रे।
राम तुम्हारे दर्शन के हित, वन में जीवन पालू रे।
चरण कमल से निर्मल कर दो, दासी की झोपड़िया।। रामा–रामा..
रोज सवेरे वन में जाकर, रास्ता साफ कर आती हूँ।
अपने प्रभु के खातिर वन से, चुन–चुन कर फल लाती हूँ।
मीठे–मीठे बेरन की भर लाई मैं छबड़िया।। रामा–रामा....
श्याम सुन्दर सलौनी सूरत, नैनन बीच बसाऊँगी।
पद पंकज की रज धर मस्तक पर चरणो शीश नवाऊँगी। रामा–
क्या प्रभु मुझको भूल गये लो दासी की खबरिया।
रामा रामा रटते–रटते बीती रे उमरिया।
रघुनन्दन कब आवोगे, भिलनी की डगरिया।।

मुखड़ा क्या देखे दर्पण में

मुखड़ा क्या देखे दर्पण में, तेरे दया धर्म ना मन में।
हरी–हरी दाग केशरिया जामा, सोहत गोरे तन में।
उस दिन की तोहे खबर नहीं, जब आग लगेगी तन में।
मुखड़ा क्या देखे.................................
कोड़ी–कोड़ी माया जोड़ी, सुरत लगी है धन है।
जब यमदूत पकड़ ले जावे, रह जाय मन की मन में।।
मुखड़ा क्या देखे.................................
आम की डारी तोता राजी, कोयल राजी आंगन में।
घर वाली तो घर में राजी, साधु है राजी वन में।।
मुखड़ा क्या देखे.................................
ऐंठत चलत मरोड़े मूंछे, तेल चुवे जुलफन में।
कहत कबीर भई ऐसा हीज़ड़ा, कैसे लडेगा रण में।
मुखड़ा क्या देखे दर्पण में, तेरे दया धर्म ना मन में।।

शिव शंकर भोले भाले

शिव शंकर भोले भाले, तुम को लाखों प्रणाम।
देवताओं पर कृपा कीनी, पी कर विष रक्षा करलीनी।
पी गये भर–भर प्याले, तुम को लाखों प्रणाम्। शिव शंकर भोले..
पार्वती ने जब तप कीना, छोड़ समाधि विवाह कर लीना।
प्रेम दिखाने वाले, तुम को लाखों प्रणाम। शिव शंकर भोले.........
रावण ने सिर काट चढ़ाया, अमृत कुंड नाभी रखवाया।
अमर बनाने वाले, तुम को लाखों प्रणाम। शिव शंकर भोले........
भला बुरा जो भक्त तुम्हारा, कोई उसको मारन हारा।
रक्षा करने वाले, तुम को लाखों प्रणाम। शिव शंकर भोले...........

जब तेरी डोली निकाली जायेगी

जब तेरी डोली निकाली जायेगी,
बिन महुर्त के उठा ली जायेगी।
उन हकीमों से कहो यों बोलकर,
करते थे दावा किताबें खोलकर।
यह दवा हरगिज न खाली जायेगी।। जब तेरी डोली....................
धन सिकन्दर का यहाँ पर रह गया,
मरते दम लुकमान भी यह कह गया।
यह घड़ी हरगिज न टाली जायेगी।। जब तेरी डोली....................
होगा जब परलोक में तेरा हिसाब,
कैसे मुकरोगे वहाँ पर ए जनाब।
जब बही तेरी निकाली जायेगी।। जब तेरी डोली....................
ऐ मुसाफिर हो रहा क्यों हैरान,
ये किराये का मिला है तुझ को मकान।
कोठरी खाली करा ली जायेगी।। जब तेरी डोली....................

भगवान भगत के वश में होते आये

जब–जब भीड़ पड़ी भक्तों पर, गरूड़ छोड़कर धाये।
भगत ने जब डाला फन्दा, आप बने हरनाई नन्दा।
प्रेम से चरण दबाये।। भगवान भगत के वश.........................
केश पकड़ कर कंस पछाड़ा, साधु बन कर रावण मारा।
राज विभिषण पाये।। भगवान भगत के वश.........................
ध्रुव भगत पर जो कृपा कीनी, भागीरथ को गंगा दीनी।
स्वर्ग दिये पहुंचाये।। भगवान भगत के वश.........................
द्रोपदी जब दुष्टों ने घेरी, राखी लाज करी ना देरी।
सभा में आये चीर बढ़ाये।। भगवान भगत के वश.........................
दुर्योधन की मेवा त्यागे, भूख लगी जब उठ कर भागे।
साग विदुर घर खाये।। भगवान भगत के वश.........................
खम्भ चीर प्रहलाद उबारा, हिरणयाकुश भी स्वर्ग सिधारा।
नर सिंह रूप धराये।। भगवान भगत के वश.........................

सोच समझ कर यतन करो भाई

संदेशा आ गया यम का चलन की कर तैयारी है।
बाल सिर के हुये धोले सफेदी आंख पर छाई।
कान से सुने पड़े ऊँचा, दाँत हिलना भी जारी है।।
संदेशा आ गया............................
कमर सब हो गई कुबड़ी, चले लकड़ी सहारे से।
गई सब देह की ताकत, लगी तन में बीमारी है।।
संदेशा आ गया............................
छुटी सब प्रीत तिरया की, पुत्र सब हो न्यारे।
बने बस मीत मतलब के, झूठ लोकन की यारी है।।
संदेशा आ गया............................
करो जगदीश का सुमरन, भरोसा राख कर मन में।
वो ब्रहमानंद है तेरा एक ही सहायकारी है।।
संदेशा आ गया यम का चलन की कर तैयारी है।

क्र.सं.	भजन	पृष्ठ सं0
103.	कैसे बैठे हो आलस में	51
104.	प्यारी गोविन्द गोपाल गाती चलो	51
105.	भजन श्याम सुन्दर का करते रहोगे	52
106.	स्टेशन जिस्म है मेरा, नब्ज की रेल चलती है	52
107.	मन के मन्दिर खोल तुझको राम मिलेंगे	53
108.	जीते लकड़ी मरते लकड़ी	53
109.	अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार	54
110.	अजब तेरी कारीगरी ने करतार	54
111.	मेरा छोटा सा संसार	55
112.	राम रमैया गाये जा, राम से लगन लगाये जा	55
113.	आवो बसाये मन मंदिर में	56
114.	दिला दो भीख दर्शन की, प्रभु तेरा भिखारी हूँ	56
115.	फिरे हम ढूंढते भगवान, कहाँ पर हम को पावोगे	57
116.	हमें क्या काम दुनियां से, हमारा कृष्ण प्यारा है	58
117.	आराम के साथ क्या–क्या थे	58
118.	वृन्दावन धाम अपार, जपे जा राधे–राधे	59
119.	राधे तेरे चरणो की अगर धूल जो मिल जाये	59
120.	इस काया की रेल रेल से अजब निराली है	60
121.	तू तो राधे कृष्ण बोल, तेरा क्या लगेगा मोल	60
122.	तेरी बीती जाये जिदंगानी	61
123.	नर तन को पाके मूर्ख खोता फिजूल क्यों है	61
124.	राधे कृष्ण क्यों नहीं जपते पीछे पछताओगे	62
125.	हे मेरे गुरुदेव करूणा सिन्धु करूणा कीजिये	62
126.	यहाँ से बदल चला कुतवाल (कोतवाल)	63
127.	वह शक्ति हमें दो दयानिधि	63
128.	एक दिन वो भोला भंडारी, बन कर ब्रज की नारी	64
129.	क्या पानी में मल–मल बहावे	64
130.	कभी राम बनके कभी श्याम बनके	65
131.	शरण में आ पड़ा तेरी	65
132.	अगर है मोक्ष की वांछा	65
133.	मुसाफिर जागते रहना नगर में	66
134.	भला किसी का कर ना सको	66

राम कहने का मजा जिस की जुबां पर आ गया

राम कहने का मजा जिस की जुबां पर आ गया।
मुक्त जीवन हो गया, चारों पदार्थ पा गया। राम कहने...............
लूटे मजे प्रहलाद ने, इस नाम के प्रताप से।
नृरसिंह हो दर्शन दिया, त्रिलोक में यश पा गया। राम कहने........
सबरी थी कोम की भिलनी, बड़े प्रेम से सुमरिन किया।
परमात्मा घर आन कर इसके हाथ से फल खा गया। राम कहने....
क्या भक्ति निर्मल छा रही, इस देख कर संसार को।
अब के आकिंत तुलसीदास यश बरसा गया।
राम कहने का मजा जिस की जुबां पर आ गया।

साधु भतेरे साधन करने वाला कोई-कोई

साधु भतेरे साधन करने वाला कोई–कोई।
मूरत तो मन्दिर में पूजा सभी करें,
मन के मन्दिर में पूजा करने वाला कोई–कोई।।
गंगा यमुना तीर्थ सब कोई नहावे,
ज्ञान गंगा में मुहं को धोने वाला कोई–कोई।।
अपने कुटुम्ब का पालन सब करते,
भूखे प्यासे को भोजन देने वाला कोई–कोई।।
राम का नाम ठग ठाकुर भी लेते,
प्रेम में प्रभु के पागल होने वाला कोई–कोई।।
अपनी मृत्यु में सब कोई मरते हैं,
देश की सेवा में मरने वाला कोई–कोई।।
गीता–भजन संध्या माला सब कोई करते,
सच्चे दिल से ध्यान लगाने वाला कोई–कोई।।
वेद पुराण शास्त्र सब कोई पढ़ते,
सुनकर विचार करने वाला कोई–कोई।।
अपने द्रव्य से ऐश असरत सब करते भोगे,
किसी गरीब को देने वाला कोई–कोई।। साधु भतेरे...................

तेरे दर को छोड़ कर किस दर जाऊँ मैं

तेरे दर को छोड़ कर किस दर जाऊँ मैं,
सुनता मेरी कौन है किसे सुनाऊं मैं।
जब से याद भुलाई तेरी, लाखों कष्ट उठाये हैं।
न जाने इस जीवन अन्दर, कितने पाप कमायें हैं।
प्रभु हूँ शर्मिन्दा आप से क्या बतलाऊँ मैं।। तेरे दर को छोड़.....
मेरे पाप कर्म ही तुम से प्रीत ना करने देते हैं।
कभी जो चाहूँ मिलू आप से, रोक मुझे ये लेते हैं।
फिरे कैसे भगवान आप के दर्शन पाऊँ मैं।। तेरे दर को छोड़.....
तू ही नाथ वरों का दाता तुझ से सब वर पाते हैं।
ऋषि मुनी और योगी सारे तेरे ही गुण गाते हैं।
प्रभु छींटा दे दो ज्ञान का होश में आऊँ में।। तेरे दर को छोड़.....
जो बीती सो बीती लेकिन बाकी उमर संभालू मैं,
चरणों में प्रभु बैठ आप के गीत प्रभु के गाऊँ मैं।
जीवन प्यारे दिनश का सफल बनाऊँ मैं,
तेरे दर को छोड़ कर किस दर जाऊँ मैं,।

बजरंग बली मेरी नाव चली

बजरंग बली मेरी नाव चली जरा बल्ली कृपा की लगा देना।
मुझे रोग शोक ने घेर लिया, मेरे पाप को नाथ मिटा देना।।
मैं दास तो आपका जन्म से हूँ बालक और शिष्य धर्म से हूँ।
वे शर्म विमुख निज कर्म से हूँ, चित्त से मेरो दोष भूला देना।
बजरंग बली मेरी नाव चली.......................................
दुर्बल और गरीब हूँ मैं नित क्रिया क्रन गति क्षीण हूँ मैं
बलवीर तेरे आधीन हूँ मैं, मेरी बिगड़ी बात बना देना। बजरंग बली...
बल देकर मुझ को निर्भय कर दो ये शक्ति मेरी अक्षय कर दो।
मेरे जीवन को सुखमय कर दो, संजीवन लाय पिला देना। बजरंग बली...
करूणा निधि आपका नाम भी है, शरणागत राधे श्याम भी है।
इससे अतिरिक्त ये काम भी है, श्री राम से मुझे मिला देना।।
बजरंग बली मेरी नाव चली जरा बल्ली कृपा की लगा देना।।

इतनी शक्ति हमें दे ना दाता

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चले नेक रस्ते पर, निशदिन भूल कर भी कोई भूल हो ना।।
दूर अज्ञान के हो अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बच कर रहें हम, जितनी भी दे भली जिन्दगी दे।
बैर हो ना किसी का किसी से, भावना मन से बदले की हो ना।
हम चले नेक रस्ते पर.............................
हम सोचें हमें क्या मिला है, हम यह सोचे किया क्या है अर्पण।
फूल खुशियों के बांटे सभी को, सबका जीवन बन जाये मधुबन।
अपनी करूणा का जल तू बहा दे,
कर दे हर एक मन का कोना।
हम चले नेक रस्ते पर.............................
हर तरफ जुल्म है बेबसी है, सहमा–सहमा सा हर आदमी है,
पाप का बोझ बढ़ता ही जायें, जाने कैसे ये धरती थमी है।
बोझ ममता से तू उठा ले, तेरी रचना का अंत हो ना।
हम चले नेक रस्ते पर.............................
हम अंधेरे में है रोशनी दे, खो ना दे खुद को ही दुश्मनी में,
हम सजा पाये अपने किये की, मौत भी हो सह ले खुशी से।
कल हो गुजरा है फिर से ना गुजरे,
आने वाला वह कल ऐसा हो ना।
इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चले नेक रस्ते पर, निशदिन भूल कर भी कोई भूल हो ना।।